E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

"माया वर्मा के काव्य में चरित्र–निर्माण के सूत्र"

हेमलता धाकड़

शोधार्थी (हिन्दी)

जीवाजी विश्वविद्यालय

ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ. श्रद्धा सक्सेना

(प्राध्यापक हिन्दी)

शोध निर्देशक

शा. महारानी लक्ष्मीबाई उत्कृष्ट महाविद्यालय

ग्वालियर, म.प्र.

Paper Received date

05/06/2026

Publishing Date

10/06/2026

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.21979313

IMPACT FACTOR 5.924

सारांश

इस शोध पत्र में ग्वालियर की समकालीन कवयित्री माया वर्मा के काव्य में निहित चरित्र निर्माण के सूत्रों पर प्रकाश डाला गया है। मायाजी की कविताएँ न केवल व्यक्तिगत भावों की अभिव्यक्ति हैं, बल्कि वे समाज में नैतिक और मानवीय मूल्यों की पुर्नस्थापना का सशक्त माध्यम हैं। इस शोध अध्ययन का मुख्य उददेश्य उनकी कविताओं के माध्यम से उन वैचारिक, धार्मिक और आध्यात्मिक तत्वों को खोजना है, जो एक आदर्श चरित्र निर्माण में सहायक हैं।

इस शोध पत्र में विषय–वस्तु विश्लेषण और व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। स्पष्ट रूप से माया वर्मा के काव्य में चरित्र–निर्माण के तीन प्रमुख सूत्र उभरते हैं– धर्म व अध्यात्म के वास्तविक रूप से परिचय, अन्तः चेतना का जागरण और सच्चे प्रेम, करुणा व परोपकार की भावना।

यह शोध वर्तमान की युवा पीढ़ी और बच्चों में नैतिक और चारित्रिक पतन को रोकने और मानवीय संवेदनाओं को जगाने में माया वर्मा के काव्य की समकालीन प्रासंगिकता को सिद्ध करता है।

कुंजी शब्द– माया वर्मा, चरित्र–निर्माण, अंतः–चेतना, धर्म, अध्यात्म, नैतिक मूल्य, परोपकार, मानवीय संवेदना, मूल्यपरक–साहित्य

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रस्तावना

माया वर्मा एक सशक्त समकालीन कवयित्री के रूप में विख्यात हैं। उनके लिए साहित्य मनोरंजन का साधन न होकर सामाजिक उत्थान व मानवीय–मूल्यों के विकास का साधन है। कोई भी कविता जब लोक–कल्याण की भावना से ओत–प्रोत होती है, तो वह मानव के चारित्रिक और नैतिक–मूल्यों को जागृत करने का कार्य करती है। समकालीन हिन्दी कविता के परिदृश्य में ग्वालियर अंचल की सुप्रसिद्ध कवयित्री माया वर्मा का काव्य इसी युवा एवं बाल–चेतना, मानवीय–संवेदना व नैतिक–मूल्यों का उत्कृष्ट उदाहरण है। मायाजी की कविताएँ केवल शब्दों की जादूगरी नहीं है, बल्कि वह समाज के पुनर्निमाण, बच्चों व युवाओं के चरित्र–निर्माण और मानवीय–मूल्यों के उत्थान का सशक्त माध्यम हैं।

उद्देश्य

- माया वर्मा के काव्य का उद्देश्य, बच्चों, युवाओं और नारी सभी को सांस्कृतिक–मूल्यों से परिचित कराना तथा उस संस्कृति को अपने जीवन में धारण करने का संदेश देना है, जिसमें मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा धन उसके चरित्र को माना गया है।
- मायाजी के काव्य का उद्देश्य, आधुनिक युग में गिरते नैतिक–मूल्यों के बीच आदर्श चरित्र–निर्माण को बढ़ावा देना और समाज में सत्य, ईमानदारी, परोपकार व सदाचार को स्थापित करना है।
- मनुष्य के भीतर करुणा, दया, पारस्परिक प्रेम व सहानुभूति की भावना जगाना, ताकि एक संवेदनशील समाज की स्थापना की जा सके।
- मायाजी के काव्य में चरित्र–निर्माण का उद्देश्य लोगों को वैचारिक रूप से सुदृढ़ बनाना है, जिससे मनुष्य जातिवाद, अंधविश्वास और सामाजिक विषमता के खिलाफ खड़ा हो सके।
- आधुनिकता की होड़ से बचना और उससे प्रभावित हुए बिना आंतरिक विकास और आत्म–सुधार के लिए प्रेरित करना है।

उपकल्पना

कवयित्री माया वर्मा के काव्य में नैतिक–मूल्यों, मानवीय–संवेदनाओं, देश–प्रेम, परोपकार, अध्यात्म, धर्म का वास्तविक स्वरूप और सांस्कृतिक–चेतना जैसे मुख्य तत्व हैं, जो मनुष्य की आंतरिक और बाह्य चरित्र–निर्माण के मुख्य सूत्र बनते हैं।

मायाजी की सरल व सहज भाषा शैली, कविताओं में प्रयुक्त बिम्ब व प्रतीक अंचल की सांस्कृतिक मर्यादाओं और लोक–संस्कारों को प्रतिबिम्बित करते हैं।

उनके काव्य में वर्णित चारित्रिक–सिद्धांत मुख्यतः युवा पीढ़ी के नैतिक–भटकाव को दिशाबोध कराने और नारी में आत्म–सम्मान व दृढ़–चरित्र का निर्माण करने में सक्षम हैं।

मुख्य भाग

युवा और बच्चे भावी देश का भविष्य हैं, अतः युवाओं, बच्चों और महिलाओं को लेकर मायाजी का हृदय हमेशा संवेदनशील रहा है। इस वर्ग के प्रति उनकी चिन्ता इसलिए भी स्वभाविक है, क्योंकि आधुनिकता और पाश्चात्य–संस्कृति का प्रभाव

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सबसे पहले इन्हें प्रभावित करता है। किसी भी प्रकार का अंधानुकरण व्यक्ति के व्यक्तित्व और समाज दोनों के लिए हानिकारक है।

मायाजी कहती हैं, कि आज की युवा पीढ़ी मानवीय मूल्यों को समझे, मनुष्य के वास्तविक धर्म से परिचित हो और आदर्श–चरित्र का निर्माण कर स्वयं व समाज और देश के गौरव को बढ़ाने में अपनी भूमिका सुनिश्चित करे।

मायाजी के अनुसार मानव जीवन तभी सार्थक है, जब वह सद्गुणों की सुरभि से समाज को महकाए। वे अपने काव्य में दया, करुणा, प्रेम, ममता, त्याग, ईमानदारी और परोपकार जैसे शाश्वत मूल्यों का समर्थन करती हैं।

उनके अनुसार, मानवीय–चरित्र का वास्तविक आकलन इस बात से होता है, कि वह व्यक्ति समाज के प्रति कितना संवेदनशील है। अतः वे ऐसे चरित्र के निर्माण की कल्पना करती हैं, जो स्वार्थ से परे लोक–कल्याण के लिए समर्पित हो।

मायाजी मानती हैं, कि आज की युवा पीढ़ी को अध्यात्म की आवश्यकता है, क्योंकि महान–चरित्र बाहरी दिखावे से नहीं, बल्कि आंतरिक शुद्धता से बनता है। इस कथ्य को उनकी कविता– 'खूब रामायण पढ़ी है' के माध्यम से समझा जा सकता है। जिसमें वे कहती हैं, कि रामायण या किसी धार्मिक ग्रंथ को पढ़ लेना या उसे कंठस्थ कर लेना नैतिक रूप से उत्कृष्ट या चरित्रवान होने का पैमाना नहीं है, जब तक कि किसी धार्मिक ग्रंथ में वर्णित मानवीय–मूल्यों, आदर्शों और संस्कारों को व्यक्ति अपने जीवन में आत्मसात न करले। उनकी इन पंक्तियों में यह भाव स्पष्ट है –

"प्यार का हम नाम भूले, हृदय से ममता उड़ी है।
और कहते हम, कि हमने खूब रामायण पढ़ी है।।"

माया वर्मा के अनुसार, एक श्रेष्ठ चरित्र की पहली पहचान है, कि वह समाज के उपेक्षित वर्ग, अनाथ और असहाय लोगों के प्रति सहानुभूति रखे, उनके आँसू पोंछ सके।

एक आदर्श व्यक्ति केवल मूकदर्शक नहीं होता, बल्कि ऐसा चरित्र दूसरों के जीवन से निराशा हटाकर आशा का संचार करता है। आज के स्वार्थी युग में, जहाँ लोग केवल अपने स्वार्थ के लिए रिश्ते बनाते हैं, वहाँ कवयित्री एक ऐसे निःस्वार्थ–चरित्र की कामना करती हैं, जो अकेलेपन और भेदभाव के शिकार लोगों को अमृत जैसा शुद्ध अपनापन और प्रेम बांटे।

हमारा चरित्र ऐसा हो, जो उन लोगों के जीवन को सुखी और ज्ञानमय बना दे, जिन्होंने जीवन में कभी सुख या सम्मान न देखा हो। स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरों का कल्याण करना मानव–चरित्र की सर्वोच्च अवस्था है। 'स्व' से ऊपर उठकर 'सर्व' के लिए जीने वाला ही उज्ज्वल–चरित्र कहलाता है।

मायाजी की इन पंक्तियों में बताया गया है, कि सच्चा चरित्र वही है, जो समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति का हाथ थामकर उसे गले लगाए –

"उनके लिए जियें हम जो मर–मर कर जीते हैं यह जीवन।
गंध बनें उनके हित जो न जानते क्या होता है चंदन।।
जिनका कोई नहीं जगत में, उनका हम ही बनें सहारा।
अपने रहते कोई न कहने पाये, मैं किस्मत का मारा।।
ऐसे एकाकी हृदयों को बाँटें अमृतमय अपनापन।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

उनके लिए जियें हम .....।।"

सेवाभाव, सज्जनता और शालीनता ये सभी मानव जीवन में चरित्र निर्माण का मुख्य आधार हैं, जिन्हें अपने जीवन में ढालने का सन्देश मायाजी ने अपने काव्य के माध्यम से दिया है। उनका मानना है, कि जब समाज का हर व्यक्ति अपने मन और हृदय में दूसरों के लिए निःस्वार्थ सेवा भाव रखेगा, तो समाज से ईष्या, द्वेष और स्वार्थ जैसी भावनाएँ समाप्त हो जाएँगी। चरित्र–निर्माण में सबसे बड़ा बाधक 'अहंकार' है, परंतु जब कोई व्यक्ति शालीनता के प्रति झुकाव रखता है, तो उसमें स्वतः ही विनम्रता आ जाती है। यह विनम्रता व्यक्ति में नैतिक–मूल्यों का विकास करती है और उसे एक आदर्श–चरित्र युक्त जिम्मेदार नागरिक बनाती है। यदि इन गुणों को युवा और बच्चे–अपने जीवन में धारण करेंगे, तो आने वाली पीढ़ी निश्चित रूप से चरित्रवान और संस्कारवान बनेगी।

युवाओं, और बच्चों को नैतिक–शिक्षा देती मायाजी की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

"सबके प्रति हम हृदय में, रक्खें सेवा भाव।
सज्जनता, शालीनता, के प्रति रखें झुकाव।।"

आज के भागदौड़, तकनीकी निर्भरता और बढ़ती आत्मकेन्द्रित जीवन शैली के दौर में मायाजी का काव्य मानव–मूल्यों और नैतिक–चरित्र को फिर से परिभाषित करता है।

चरित्र में जब तक सात्विक गुणों और दया भाव का विकास नहीं होगा, तब तक एक संवेदनशील समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। संवेदनशीलता और दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना हमारे चरित्र का आधार होना चाहिए। हर कोई चतुर और चालाक बनने की होड़ में अपनी स्वाभाविकता खो रहा है। कवयित्री माया वर्मा अपनी इन पंक्तियों में जन–जन पर निःस्वार्थ प्रेम और स्नेह लुटाने की बात करती हैं –

"विकसा पायें अपने में यदि सात्विक गुण, ममता का भान।
भोले शिशु सी भोली चितवन और सरस निश्छल मुस्कान।।
सीखें यदि निःस्वार्थ भाव से स्नेह लुटाना जन–जन पर।
बनें न और भले कुछ, पर बन जाएँगे सच्चे इंसान।।"

माया जी के काव्य में अध्यात्म वह धुरी है, जिसके बिना मानव चरित्र–निर्माण की कल्पना करना बेमानी है। अध्यात्म हमारे अंतःकरण को शुद्ध कर दुर्गुणों को बाहर निकालने में हमारी मदद करता है। अतः अध्यात्म की उज्ज्वल चरित्र–निर्माण में अहम भूमिका है।

मायाजी की इन पंक्तियों में अध्यात्म द्वारा आदर्श–चरित्र निर्माण की ओर संकेत किया गया है–

"दिल किसी का भी नहीं हमको दुःखाना चाहिये।
बने जितना, दूसरों के काम आना चाहिए।।
छोड़कर भवजाल लें हम नाम उस भगवान का।
जन्म मानव का, मनुज बनकर बिताना चाहिए।।"

किसी का दिल न दुखाना, दूसरों के काम आना यही सब आदर्श चरित्र की पहचान हैं और यही सच्चा अध्यात्म।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

निष्कर्ष

माया वर्मा का संपूर्ण काव्य उत्कृष्ट चरित्र–निर्माण के लिए जाना जाता है। आज विश्व को ऐसे युवाओं की जरूरत है, जो भौतिकता की दौड़ में आगे बढ़ने के बजाय मानवता में विश्वास रखता हो। उसकी सच्ची सम्पत्ति आत्मसंतुष्टि, ईमानदारी, और मानवीय–मूल्य हों, ऐसे युवा ही विश्व शांति स्थापित कर सकते हैं। आज जरूरत है 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की, ताकि आपसी कटुता को त्यागकर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की कामना प्रतिफलित हो सके। माया जी की दृष्टि में एक शिक्षित नागरिक होना ही किसी देश की उन्नति का आधार नहीं है, बल्कि उसकी उन्नति उसके नागरिकों के आदर्श चरित्रवान होने में है।

माया वर्मा का काव्य इस संदर्भ में अत्यन्त ही प्रासंगिक है। ऐसे मूल्यपरक साहित्य के लिए वे सदैव स्मरणीय रहेंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वर्मा माया. (2012) संजीवनी कृति प्रकाशन. 502, सिल्वर एस्टेट. ग्वालियर
2. वर्मा माया. (1998) जीवन–सुरभि कृति प्रकाशन. ठाटीपुर, ग्वालियर (म.प्र.)
3. वर्मा माया. (2016) बाल–नीति शतक. युग निर्माण योजना प्रेस. गायत्री तपोभूमि, मथुरा–3
4. वर्मा माया. (1999) गागर में सागर कृति प्रकाशन. ठाटीपुर, ग्वालियर (म.प्र.)